+ Community Based Rehabilitation का विकास निम्नलिखित कसौटियों पर आधारित होना चाहिए :—

1) विकलांग लोगों को Community Based Rehabilitation कार्यक्रम के अन्तर्गत खुद को शामिल करना चाहिए, जैसे लोग विकलांगता से संबंधित प्रमुख निर्णय - प्रक्रिया में खुद को शामिल करें।

2) CBR कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है विकलांग लोगो की जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना।

3) CBR कार्यक्रम का दूसरा प्रमुख उद्देश्य हैं समुदाय के लोगो में विकलांगता के प्रति एक सकारात्मक मनोवृत्ति विकसित करना साथ - ही साथ उन्हे अधिक से अधिक Rehabilitation आन्दोलन के साथ जोड़ना।

4) CBR के अन्तर्गत विकलांगता के सभी प्रकार के लोगो जैसे (शारीरिक, सांवेगिक, मानसिक विकलांगता) का तथा सभी उम्र के विकलांग लोगो के विकास पर ध्यान दिया जाता हैं।

5) CBR के अन्तर्गत महिला तथा लड़कियो पर जो विकलांगता के शुरू रही हैं समान व्यवहार किया जाता है, न कि लिंग के आधार पर वे किसी प्रकार की असमानता का सामना करते हैं।

6) CBR कार्यक्रम लचीला होता है। यह स्थान और व्यक्ति विशेष के आधार पर आसानी से परिवर्तित होता हैं।

7) CBR कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले या निभाए जाने वाले भूमिका को स्पष्ट रखा जाता हैं। ऐसे लोगो के द्वारा स्थानीय स्तर (Local level) पर Rehabilition कार्यक्रम को चलाया जाता हैं।

अतः स्पष्ट है कि CBR को सचांलित कई कसौटियों के आधार पर किया जाता है।

Community Based Rehabilitation

Community Based Rehabilitation का उद्देश्य है विकलांग (disable) लोगो की सहायता करना, इसके लिए समुदाय में सामुदायिक चिकित्सालय, अवसरो की समानता तथा physiotherapy जैसे पुनर्वास कार्यक्रम विकलांग लोगो के लिए चलाए जाते है।

Community Based Rehabilitation की शुरुआत WHO के द्वारा किया गया है जिसके अन्तर्गत विकलांग लोगो की तथा उनके परिवार की जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि की जाती है, उनके सामाजिक जरूरतो को पूरी की जाती है तथा इस बात का खास ख्याल रखा जाता है कि उनकी सहभागिता इसमे कितनी है।

19 वीं तथा 20 वीं शताब्दी में विज्ञान तथा चिकित्सा की मदद से यह समझने मे सहायता मिली की विकलांगता के तीन प्रमुख कारक जैविक तथा चिकित्सिय है, जब व्यक्ति के शारीरिक संरचना तथा कार्य मे हानि होता है तो उससे व्यक्ति की शारीरिक अवस्था भी प्रभावित होता है।

1960 तथा 1970 में विकलंगता की ध्यान विस्तृत रुप से दिया गया। विकलंगता को परिभाषित करते हुए यह कहा गया कि यह एक सामाजिक समस्या है न कि कोई व्यक्तिगत समस्या और इस समस्या का समाधान सामाजिक बाधाओं को खत्म करके ही प्राप्त किया जा सकता है न कि सिर्फ चिकित्सा के द्वारा। 1960 मे North America तथा Europe में विकलांग आन्दोलन शुरु हुआ जो धीरे-धीरे पूरे विश्व मे फैलने लगा जिसमें ज्यादा से ज्यादा विकलांग लोगो के मे यह जागरुकता लाया गया कि उन्हे अपने अधिकार के लिए इसमें शामिल होना है तथा समान अवसर अपने सर्वांगीण विकास के लिए प्राप्त करना है।